iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 9 **Issue:** VIII **Month of publication:** August 2021

DOI: https://doi.org/10.22214/ijraset.2021.37478

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.429
Volume 9 Issue VIII Aug 2021- Available at www.ijraset.com

उत्तर प्रदेश के चार सबसे पिछड़े जिलों में महिलाओं के बीच मोबाइल, हेल्पलाइन नंबर और न्यू मीडिया का उपयोग

महबास निशा[1], डॉ० शैलजा जैन [2]
[1]*PHD* स्कॉलर, [2]सहायक प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग, शासकीय के.आर.जी स्वशासी महाविधालय , ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

I. परिचय

डिजिटल संचार की घातीय वृद्धि ने समाज के लगभग हर वर्ग को प्रभावित किया है। इस प्रकार प्रश्न उठता है कि क्या संचार का उपयोग सामाजिक परिवर्तन और परिवर्तन में योगदान दे सकता है?वर्तमान परिदृश्य में, समाज की नींव पर लगातार सवाल उठाए जा रहे हैं और उसे चुनौती दी जा रही है। जवाब में, कार्यों की एक श्रृंखला, जिसका आज तक विकसित दुनिया में काफी मामूली कार्यान्वयन हुआ है, अब रचनात्मकता और नवाचार के एक मजबूत घटक के साथ उभर रही है। संचार एक ऐसा क्षेत्र है, जो अन्य आधुनिक विकासों की तरह, स्थानीय स्वामित्व वाले सुधारों और समाज में विभिन्न स्तरों पर स्थायी परिवर्तन और विकास में योगदान करने की क्षमता रखता है।बॉटम-अप सूचना पर आधारित रणनीतियाँ उन लाभों और प्रभावों को प्रवाहित करती हैं जिनका प्रवाह विकासशील समाजों में संभावित रूप से आवश्यक है क्योंकि वे सभी चरों के व्यापक ज्ञान पर आधारित होते हैं जो सिस्टम के सबसे छोटे तत्वों को भी प्रभावित कर सकते हैं। [वू २००३]सहभागी और क्षैतिज संचार पर बढ़ते जोर - जैसे हितधारक संवाद और नीचे से ऊपर या परामर्श प्रक्रियाओं ने ऐसे स्थान बनाए हैं जिनमें लोग सामाजिक परिवर्तन के अपने स्वामित्व को अर्थ प्रदान कर सकते हैं और दावा कर सकते हैं। [कुई २००८] ऐसे स्थान लोगों को न केवल सुनने की अनुमति देते हैं, बल्कि सीमाओं और सामाजिक और/या सांस्कृतिक मानदंडों को भी नया रूप देते हैं जो एक समाज में सत्ता संबंधों को प्रभावित करने में योगदान करते हैं। इसके परिणामस्वरूप सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन में योगदान होता है। [सेर 2013]

इसका उदाहरण देने वाली स्थितियां पूरी दुनिया में अलग-अलग संदर्भों में आसानी से दिखाई देती हैं। बहुत अलग परिदृश्यों और पृष्ठभूमि में समान कार्यप्रणाली के अनुप्रयोग को पूरे विश्व में समान या भिन्न संदर्भों में देखा जा सकता है। [डॉन २००७] सामान्य बिंदु इंटरनेट का व्यापक उपयोग है संचार नेटवर्क जो परियोजनाओं का गठन करने वाले सदस्यों के बीच होने वाले निहितार्थ और अंतःक्रिया को बढ़ाते हैं, चाहे वे विकासात्मक, अवसंरचनात्मक या सामाजिक हों। यह सहभागी पद्धति सर्वसम्मति-आधारित दृष्टिकोणों को परिभाषित करने और प्रस्तावित करने में मदद करती है, जहां संचार लोगों को शामिल करने और शहरी/ग्रामीण संदर्भ को प्रभावित करने की कुंजी बन जाता है जहां इसे लागू किया जाता है। [क्विन 2008]

संचार स्थानीयकरण और अंतर्राष्ट्रीयकरण दोनों के एक तंत्र के रूप में विकसित होता है, जिससे संचार की पहुंच अंधाधुंध मुक्त और सभी के लिए सुलभ हो जाती है। खुले संचार को लगभग समानता और निष्पक्षता की गारंटी और प्रगति के मार्ग के रूप में समझा जाता है। [मेल २०१३]

II. साहित्य समीक्षा

A. "महिलाओं की प्रगति ही मानव प्रगति"

जॉन्स हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ एडवांस्ड इंटरनेशनल स्टडीज (एसएआईएस) ने 2014 में ग्लोबल वीमेन इन लीडरशिप पर अपना सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें उन तरीकों की जांच की गई जिनमें तकनीक महिलाओं के लिए नए अवसर प्रदान कर रही थी। "टेक्नोलॉजी इन एक्शन: चेंजिंग द वे वे वुमन लाइव एंड वर्क" शीर्षक वाले सम्मेलन ने इस बात पर भी ध्यान केंद्रित किया कि कैसे महिलाएं इस तथ्य का लाभ उठा रही हैं कि तकनीक न केवल सेवा वितरण में सुधार कर रही है, बल्कि उनके सशक्तिकरण को आगे बढ़ाने में एक प्रमुख भूमिका निभा रही है। [एसएआईएस 2014]

III. अनुसंधान डिजाइन और कार्यप्रणाली

A. अनुसंधान का प्रकार

बुनियादी अनुसंधान के विपरीत, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान का एक रूप जो किसी के ज्ञान और सामाजिक अनुसंधान की समझ को जोड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है, व्यावहारिक अनुसंधान यहां अपनाया गया मार्ग है क्योंकि व्यावहारिक परिणाम उत्पन्न होते हैं जिन्हें नीति बनाने के लिए व्यवहार में लाया जा सकता है, शीघ्र सहायता और प्रभावी सूचना प्रसार और इसकी प्रयोज्यता के माध्यम से परामर्शी प्रक्रिया की सहायता करना। यह वर्णनात्मक अध्ययन एक साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से उत्तरदाताओं को संबोधित करके मात्रात्मक डेटा विश्लेषण का उपयोग करेगा और उनकी प्रतिक्रियाओं को एकत्रित और विश्लेषण करेगा।

©IJRASET: All Rights are Reserved

B. डेटा संग्रह की विधि

जनगणना 2011 और जिला विकास सूचकांक के रूप में माध्यमिक डेटा डेटा संग्रह और नमूना संरचना बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली दो मुख्य रिपोर्टें थीं। मध्य उत्तर प्रदेश के चार सबसे पिछड़े जिलों के आठ गांवों में 500 से अधिक उत्तरदाताओं के साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्राथमिक डेटा एकत्र किया गया था।

C. अनुसंधान उपकरण और इसके चयन का कारण

इस डेटा को एकत्र करने के लिए एक साक्षात्कार अनुसूची को सबसे अच्छे उपकरण के रूप में चुना गया था क्योंकि अध्ययन के तहत बड़ी संख्या में ग्रामीण उत्तरदाता साक्षर नहीं थे और सोशल मीडिया के स्वतंत्र चर और अन्य सभी कारक सोशल मीडिया के उपयोग पर निर्भर थे और उसी सेवा से प्रभावित थे। अध्ययन के आश्रित चर के रूप में।

D. अनुसंधान उपकरण का विकास

अनुसंधान उपकरण का निर्माण स्वास्थ्य, शिक्षा, सूचना प्रसार और परामर्श प्रक्रिया, ग्रामीण हेल्पलाइन, महिला अधिकारिता, ग्रामीण रोजगार योजनाओं, कृषि सुविधाओं, सरकारी और गैर-सरकारी हेल्पलाइन और सेवाओं की निगरानी और स्वीकार्यता सुनिश्चित करने के मुख्य क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए किया गया था। वही यदि पारंपरिक सूचना प्रसार को मोबाइल प्रौद्योगिकी और एसएमएस/आईवीआरएस द्वारा प्रतिस्थापित किया गया था।

E. सत्यापन और पूर्व परीक्षण

साक्षात्कार अनुसूची का सत्यापन और पूर्व परीक्षण एक चयनित नमूने पर कमियों और उसी की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए किया गया था। इससे कुछ महत्वपूर्ण परिणाम प्राप्त हुए जैसे कि साक्षात्कार अनुसूची का स्थानीय भाषा में होना आवश्यक है। यह भी पाया गया कि साक्षात्कार अनुसूची का संचालन करने वाले पुरुषों को ग्रामीण महिला आबादी के साथ संवाद करने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा, इस प्रकार गांवों में उसी के संचालन के दौरान एक महिला को शामिल करना उचित समझा गया। संभावित उत्तरदाताओं के एक छोटे से नमूने पर सत्यापन और पूर्व परीक्षण किया गया था। स्थानीय भाषा में साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग करने की आवश्यकता महसूस की गई, यह देखते हुए कि अधिकांश उत्तरदाता ग्रामीण क्षेत्रों के थे और उनके द्वारा इसे आसानी से समझने योग्य बनाने के लिए स्थानीय बोलचाल को शामिल करने पर ध्यान दिया जाना था।

F. नमूनाकरण

चूंकि अनुसंधान का उद्देश्य मोबाइल उपयोग की स्वीकार्यता और पैठ का पता लगाना था, अध्ययन के लिए एक उचित नमूना आधार प्राप्त करने के लिए उक्त क्षेत्रों में मोबाइल का उपयोग करने वाले उत्तरदाताओं का बहु-चरण उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण किया गया था।

1) **चरण I:** मध्य यूपी के चार सबसे पिछड़े जिलों (गोंडा, सीतापुर, रायबरेली और बाराबंकी) को उत्तर प्रदेश के जिला विकास सूचकांकों के आधार पर राज्य के विभिन्न जिलों को विकसित, पिछड़े और सबसे पिछड़े के रूप में वर्गीकृत किया गया था। इनका चयन रैंडम सैंपलिंग (फिश बाउल मेथड) के जरिए किया गया था। [डीडीआई २००३] [भारत सरकार पीसी-यूपी] [एचडीआई यूएन २००७]
2) **चरण II:** रैंडम सैंपलिंग (फिश बाउल मेथड) के माध्यम से प्रत्येक जिले की एक तहसील का चयन।
3) **चरण III:** प्रत्येक जिले की प्रत्येक तहसील में एक प्रखंड का पुन: रैंडम सैम्पलिंग के माध्यम से चयन।
4) **चरण IV:** प्रत्येक ब्लॉक से दो गांवों का चयन एक सबसे अधिक आबादी वाले गांवों से और दूसरा सबसे कम आबादी वाले गांवों से रैंडम सैंपलिंग-फिश बाउल विधि के माध्यम से। पूर्व-परीक्षण चरण से निष्कर्षों को शामिल करते हुए, मध्य उत्तर प्रदेश के चार चयनित सबसे पिछड़े जिलों में उत्तरदाताओं से प्रतिक्रिया एकत्र करने के लिए एक साक्षात्कार अनुसूची तैयार की गई थी। 52-चर प्रश्नावली में स्वास्थ्य, शिक्षा, सूक्ष्म-वित्त, ग्रामीण विकास आदि से संबंधित क्षेत्रों में मोबाइल उपयोग स्वीकृति और विकास के संबंध में डेटा की मांग की गई थी।

सर्वेक्षणकर्ताओं की टीम में महिलाओं को शामिल करने के लिए ध्यान रखा गया था, जिन्होंने साक्षात्कार अनुसूची के सत्यापन के दौरान ग्रामीण महिलाओं से प्रतिक्रिया लेने का प्रयास करते हुए अपने पुरुष समकक्षों द्वारा संचार की बाधाओं को प्रभावी ढंग से पार कर लिया था।

IV. डेटा विश्लेषण और निष्कर्षों की व्याख्या

पहला कारक जो प्रकाश में आया वह था उपयोग में असमानता की समस्या जो काफी हद तक उम्र, लिंग, साक्षरता/शिक्षा और जाति जैसे कारकों पर निर्भर थी, जो इसमें एक बड़ी भूमिका निभाती है।

भारत के कई क्षेत्रों में अभी भी सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण। यह पाया गया कि उत्तर प्रदेश में 42% महिलाएं मोबाइल का उपयोग कर रही थीं, उसी श्रेणी में पुरुषों के लिए यह आंकड़ा लगभग 54% था।

©IJRASET: All Rights are Reserved

A. डेटा स्रोत: डॉक्टरेट शोध अध्ययन के हिस्से के रूप में शोधकर्ता द्वारा उत्तर प्रदेश, भारत के 4 सबसे पिछड़े जिलों से अनुसंधान डेटा संग्रह

तालिका 4.1 मोबाइल का उपयोग

उद्देश्य	नर (%)	महिलाएं (%)
कॉलिंग	23	18
कॉलिंग और एसएमएस	58	64
कॉलिंग, एसएमएस और ईमेल	1	0
कॉलिंग, एसएमएस, ईमेल और एफबी	9	7
कॉलिंग एसएमएस ईमेल एफबी और व्हाट्सएप	9	1 1

- **डेटा की व्याख्या:** कोई भी आसानी से देख सकता है कि जब उपयोग करने की बात आती है, तो पुरुष और महिला दोनों ही महिलाओं की रेटिंग के साथ लगभग समान रूप से मोबाइल का उपयोग कर रहे हैं, जब कॉल / एसएमएस के लिए मोबाइल का उपयोग करने की बात आती है (जिसमें बाद वाला, जिसे जाना जाता है) उनके उपयोग में मितव्ययी-अधिक कुशल हैं) आश्चर्यजनक रूप से महिलाएं पुरुषों से आगे निकल जाती हैं जहां व्हाट्सएप के उपयोग का संबंध है। यह भी हो सकता है कि वे अपने मोबाइल का उपयोग करने में सहायता के लिए अक्सर परिवार के पुरुष / साक्षर महिला सदस्यों की मदद लेते हैं।

तालिका 4. 2: **मोबाइल उपयोग की आवृत्ति**

प्रयोग	नर (%)	महिलाएं (%)	संपूर्ण (%)
बार बार	52	58	53
कभी कभी	48	42	47

- **डेटा की व्याख्या:** जहां उपयोग की आवृत्ति का संबंध है, महिलाएं पुरुषों की तुलना में समान रूप से आगे बढ़ रही हैं। गतिशीलता पर सामाजिक प्रतिबंध यहां एक कारक हो सकता है जो महिला लिंग के पक्ष में मोबाइल उपयोग के पैमाने को झुकाता है। यह लैंगिक असमानता को भी दर्शाता है जो अक्सर ग्रामीण इलाकों में महिलाओं के साथ संसाधनों और संचार के साधनों तक सीमित पहुंच के साथ और सामाजिक पर हावी होने के साथ सामना करती है, इस प्रकार पुरुषों पर अपने निकट और प्रियजनों से संपर्क करने के लिए मोबाइल का सहारा लेने की अधिक संभावना होती है। उनके पक्ष में गतिशीलता की स्वतंत्रता।

B. **संचार के एक किफायती साधन के रूप में मोबाइल पर धारणा**

- **डेटा की व्याख्या:** प्रतिक्रियाओं का अध्ययन तीन मापदंडों पर किया गया था- क्या उपयोगकर्ता द्वारा मोबाइल के उपयोग को सस्ता/सस्ती/महंगा माना गया था। पुरुषों से ज्यादा महिला पुरुषों को मिले मोबाइल संचार का सस्ता साधन। दूसरी श्रेणी में, यह पूछे जाने पर कि क्या मोबाइल संचार का एक किफायती माध्यम था, फिर से 55.2% पुरुषों ने कहा कि उन्होंने इसे संचार का एक सस्ता साधन पाया, जबकि 40% से अधिक महिलाओं ने इसे मध्यम रूप से किफायती माध्यम पाया। उत्तरदाताओं में, 26.3% पुरुषों ने कहा कि उन्होंने इसे संचार का एक महंगा साधन पाया, जबकि 40.4% महिला उत्तरदाताओं ने कहा कि मोबाइल का उपयोग करना महंगा था।

©IJRASET: All Rights are Reserved

तालिका 4. 4: मोबाइल की उपयोगिता पर धारणा

मोबाइल की उपयोगिता	**पुरुष (%)**	**महिला (%)**	**संपूर्ण (%)**
फायदेमंद	36.4	25	34.4
मध्यम रूप से लाभकारी	5.0	7	5.2
लाभकारी नहीं	0.2	0	0.2
नहीं कह सकता	56.4	64	57.8

- **डेटा की व्याख्या:** मोबाइल की उपयोगिता के बारे में धारणा की एक समानता थी, जिसमें पुरुषों ने 41.4 फीसदी अंक हासिल किए और महिलाओं ने मोबाइल के पक्ष में 32 फीसदी मतदान किया, जो संचार का एक उपयोगी साधन है। विश्लेषण को बड़ी संख्या में 'अनिश्चित' (पुरुषों में 56 प्रतिशत और महिलाओं में 64) द्वारा बाधित किया गया था, जो किसी भी तरह से निर्णय नहीं ले सके। केवल एक नगण्य प्रतिशत मोबाइल और उनकी उपयोगिता के खिलाफ नकारात्मक में पोस्ट किया गया।

तालिका 4.5: **महिला हेल्पलाइन के बारे में जागरूकता** 1090

1090 . **की जागरूकता**	**पुरुष**%	**महिला**%	**संपूर्ण** %
हाँ	६१	54	60
नहीं	39	46	40

- **डेटा की व्याख्या:** एक हेल्पलाइन के लिए जो तीन साल से थोड़ा अधिक समय से चालू है, 1090 के पक्ष में प्रतिक्रिया उल्लेखनीय थी। ६१% पुरुषों और ५४% महिलाओं ने इस हेल्पलाइन के बारे में जानने की बात स्वीकार की, जो लिंग अपराधियों और पूर्व संध्या पर छेड़खानी करने वालों पर त्वरित कार्रवाई सुनिश्चित कर रही है और पीड़ितों को न्याय तक परेशानी मुक्त पहुंच प्रदान कर रही है।

तालिका 4.6: **मोबाइल एसएमएस/आईवीआरएस के माध्यम से सरकारी योजनाओं की दी गई जानकारी**

मोबाइल एसएमएस	**पुरुषों**	**महिलाओं**	**संपूर्ण**
हाँ	94.2	88	93
नहीं	5.8	12	07

- **डेटा की व्याख्या:** यह फिर से प्राप्त किए गए सबसे सकारात्मक परिणामों में से एक है - 94% से अधिक पुरुषों और 88% महिलाओं ने अपने मोबाइल पर उनके लाभ के लिए सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देने के लिए कहा, कुल मिलाकर 93% कुल मिलाकर।

©IJRASET: All Rights are Reserved

तालिका 4.7: **हेल्पलाइन** 102/108 **पर सरकार की मुफ्त एम्बुलेंस योजना के बारे में जागरूकता**

एसएमएस/आईवीआरएस	**नर** (%)	**महिलाएं** (%)	**संपूर्ण** (%)
हाँ	99.8	100	99.8
नहीं न	0.2	0	0.2

- **डेटा की व्याख्या:** फिर से पुरुषों और महिलाओं दोनों के एक विशाल बहुमत ने राज्य में लोगों, विशेष रूप से समाज के वंचित वर्गों के लोगों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं के लिए घर-घर मुफ्त पहुंच प्रदान करने के लिए राज्य में संचालित इस बहुत ही आसान हेल्पलाइन के बारे में जानने के लिए कहा। पुरुषों और महिलाओं दोनों में इसके बारे में लगभग 100% जागरूकता है

तालिका 4.8: पुलिस हेल्पलाइन के बारे में जागरूकता 100

हेल्पिन 100	**नर (%)**	**महिलाएं (%)**	**संपूर्ण (%)**
हाँ	99.5	100	99.6
नहीं	0.5	0	0.4

- **डेटा की व्याख्या:** दोनों लिंगों में लगभग 100% प्रतिक्रिया दर्शाती है कि जहां उनकी सुरक्षा की बात आती है, राज्य की जनता उनकी सुरक्षा और भलाई सुनिश्चित करने वाली हेल्पलाइनों को अपनाने के लिए तत्पर है।

तालिका 4.9: **सर्वश्रेष्ठ संचार उपकरण की धारणा**

सर्वश्रेष्ठ संचार उपकरण	**नर (%)**	**महिलाएं (%)**	**संपूर्ण (%)**
व्यक्तिगत बातचीत	42.7	35.9	41.4
मोबाइल हेल्पलाइन/एसएमएस	40.0	44.9	40.8
लोक तरीके या पीए सिस्टम	0.5	0	0.6
पैम्फलेट/दीवार लेखन	1.2	3.5	1.6
ईमेल/वेबसाइट	15.6	15.7	15.6

- **डेटा की व्याख्या:** यह पूछे गए सभी प्रश्नों में सबसे कठिन था - यह पता लगाने के लिए कि क्या व्यक्तिगत बातचीत के लिए पारंपरिक वरीयता नए मीडिया और इसके उपयोग को रास्ता दे रही है। व्युत्पन्न डेटा स्पष्ट रूप से इंगित करता है कि व्यक्तिगत बातचीत एक पसंदीदा पसंदीदा बनी हुई है, मोबाइल हेल्पलाइन / एसएमएस / ईमेल और वेबसाइटों का उपयोग करते हुए संचार के अन्य रूपों ने उसी को पीछे छोड़ दिया है जहां यह सबसे पसंदीदा संचार साधनों की बात आती है। ४४.४% पुरुषों और ३९.४% (कुल ४३%) महिलाओं ने संचार के पारंपरिक साधनों के पक्ष में मतदान किया और इस प्रकार आधुनिक डिजिटल संचार उपकरणों (५५.६% पुरुष / ५०.६% महिलाओं और कुल ५६.४% के पक्ष में) को स्पष्ट बहुमत दिया।

©IJRASET: All Rights are Reserved

V. निष्कर्ष

निम्नलिखित बिंदुओं को सिद्ध करने के लिए डेटा का विस्तृत विश्लेषण जारी है:

1) महिलाएं मोबाइल उपयोग के लाभों के प्रति समान रूप से संवेदनशील हैं और उन्हें संभालने में बहुत कुशल हैं और साथ ही विभिन्न एप्लिकेशन जो आज मोबाइल ग्राहकों को स्मार्टफोन प्रदान करते हैं।
2) शोध अध्ययन निर्णायक रूप से इस परिकल्पना को साबित करता है कि मोबाइल मीडिया प्रवेश के परिणामस्वरूप ग्रामीण आबादी में सकारात्मक सामाजिक और व्यवहारिक परिवर्तन हुआ है। मोबाइल के माध्यम से कॉलिंग और एसएमएस ने संचार के पारंपरिक साधनों को 50% से अधिक बहुमत के साथ बदल दिया है।
3) मोबाइल संचार ग्रामीण विकास के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में काम कर सकता है और महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए इस क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप अनुकूलित एक एकीकृत दृष्टिकोण के माध्यम से लक्षित हस्तक्षेप कर सकता है। मोबाइल हेल्पलाइन के माध्यम से अधिकतम प्रभाव के साथ संयुक्त आउटरीच प्रयास की अनुमति देने के लिए, राज्य के सबसे पिछड़े जिलों में भी, दोनों लिंगों में पर्याप्त मोबाइल पहुंच है। कम साक्षरता के बावजूद, ग्रामीण समाजों में लक्षित हस्तक्षेप के लिए सरल आईवीआरएस संदेशों और पाठ संदेशों का प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष रूप से उपयोग किया जा सकता है।
4) मोबाइल संचार और सूचना प्रसार के लिए बड़े पैमाने पर स्वीकृति है और एसएमएस/आईवीआरएस द्वारा चुनिंदा उपभोक्ता डेटाबेस के उपयोग के माध्यम से लक्षित हस्तक्षेप के माध्यम से परामर्श प्रक्रियाओं को तेज किया जा सकता है जो सूचना और पहुंच अंतर को पाटने का एक प्रभावी साधन हो सकता है।
5) अधिकांश उत्तरदाताओं ने पुष्टि की है कि वे मोबाइल मैसेजिंग / कॉल / आईवीआरएस / टेक्स्ट के माध्यम से सीधे संपर्क करने के विचार के लिए खुले हैं क्योंकि यह संचार का सबसे कुशल, तेज और सुनिश्चित साधन है। यहां तक कि जिन महिलाओं के पास फोन तक स्वतंत्र पहुंच नहीं है, उनका कहना है कि घर के पुरुष सदस्यों के स्वामित्व वाले मोबाइलों तक उनकी आसान, मुक्त और खुली पहुंच है।
6) सूचना प्रसार में बहुत बड़ा अंतर है। मोबाइल के माध्यम से किए जा सकने वाले त्वरित कुशल और सीधे संपर्क की तुलना में पारंपरिक संचार माध्यम फीके पड़ जाते हैं

आज के समय और युग में संचार का सबसे अच्छा साधन है। वास्तव में राज्य में मोबाइल की पर्याप्त पैठ है ताकि संचार और सूचना प्रसार के साधन के रूप में मोबाइल के प्रभावी उपयोग की एक राज्य नीति का मसौदा तैयार किया जा सके और मोबाइल का उपयोग करने वाली सरकार और जनता के बीच परामर्शी संवाद को आगे बढ़ाया जा सके। संचार के सस्ते और प्रभावी साधन।

REFERENCES

[1] [डीडीआई २००३] जिला विकास सूचकांक, सीजीजी वर्किंग पेपर २००३
[2] [भारत सरकार पीसी-यूपी] सरकार। भारत के योजना आयोग की उत्तर प्रदेश विकास रिपोर्ट (खंड I और II)
[3] [एचडीआई यूएन २००७]यूएनडीपी की मानव विकास रिपोर्ट २००७
[4] [मेह २०१३] मेहता बलवंत सिंह ग्रामीण भारत में मोबाइल का प्रभाव: क्षमता, लागत, नेटवर्क और नवाचार: ग्रामीण भारत में मोबाइल फोन का प्रभाव, २०१३, मानव विकास संस्थान, नई दिल्ली, भारत
[5] [WAS २०१५] २०१५ में डिजिटल, सोशल और मोबाइल, वी आर सोशल, इंटरनेट यूसेज रिपोर्ट २०१५ और २०१६
[6] [एसएआईएस २०१४] नेतृत्व सम्मेलन में २०१४ वैश्विक महिलाओं पर ब्रुकिंग्स की रिपोर्ट, जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय, उन्नत अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन स्कूल, ४ अप्रैल, २०१४। से
[7] http://www.brookings.edu/blogs/africa-in-focus/posts/2014/04/18-
[8] [बेल 2009] बेलमैन एरिक; ग्रामीण भारत में गरीब किसानों के बीच मोबाइल फोन की मांग बढ़ी, अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों को झटका लगा, 2009 में वॉल स्ट्रीट जर्नल की रिपोर्ट http://www.wsj.com/articles/sb123413407376461353 से प्राप्त हुई।
[9] [जीएसएमए २०११] महिला कार्यक्रम वैश्विक विकास गठबंधन से प्राप्त किया गया
[10] http://e-agriculture.org/news/usaid-ausaid-gsma-and-visa-partner-increase-mobile-phone-ownership-among-women
[11] [केएमवीएस २०११]: http://www.unesco.org/new/en/unesco/themes/icts/m4ed/mobile-learning-week/workshops/empowering से मोबाइल लर्निंग और संचार के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाना- महिलाओं और लड़कियों-ग्रामीण-क्षेत्रों-के माध्यम से-मोबाइल-लर्निंग-एंड-कम्युनिकेशन-द-केस-ऑफ-कोस्टा-रिका-एंड-इंडिया/

©IJRASET: All Rights are Reserved

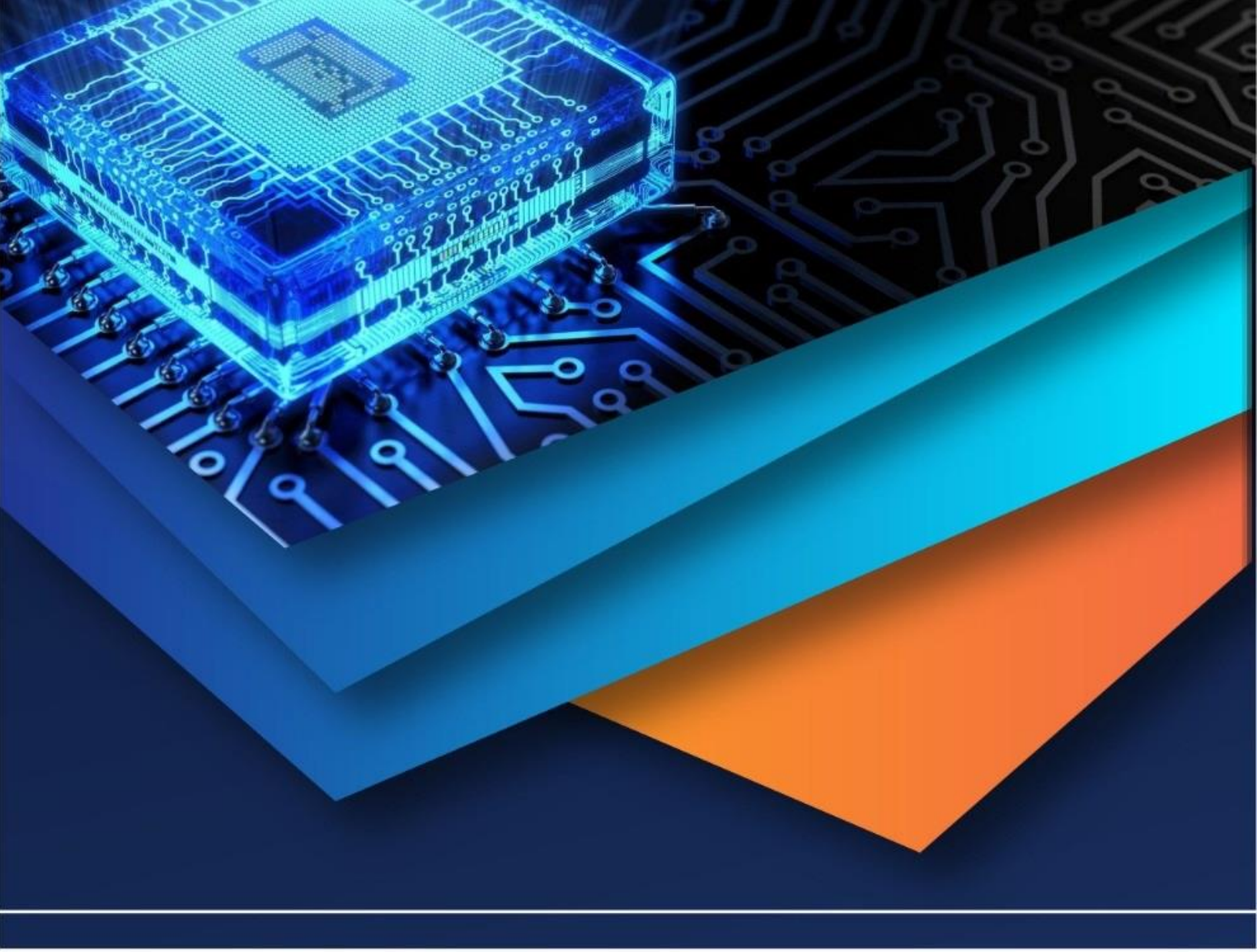

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)